

कैलिफोर्निया के अतीत के सहारे वर्तमान जलवायवीय चुनौतियों पर प्रकाश

प्रलिमिंस के लिये:

वनागन्नि, प्लेइस्टोसनि/अत्यंत नूतन युग, ला बरे टार पट्टिस, होलोसीन/अभिनव युग, **भू-वैज्ञानिक काल मापकरम**, मैमथ, वशाल भालू, भयानक भेड़िये, ऊँट

मेन्स के लिये:

भवषिय में बड़े पैमाने पर वल्लिपत्तिको रोकने की प्राथमिकता

चर्चा में क्यों?

मानव-जननि **जलवायु परिवर्तन** और वधितनकारी भूमिप्रबंधन प्रथाओं के कारण घातक **वनागन्नि** की घटनाओं की व्यापकता बढ़ गई है। हाल ही में कथिा गया एक नवीन अध्ययन **प्लेइस्टोसनि युग** के दौरान कैलिफोर्निया के इतिहास पर प्रकाश डालता है, पृथ्वी **60 मिलियन से अधिक वर्षों में** वर्तमान में सबसे बड़ी वल्लिपत्तिकी आपदा के साथ-साथ गंभीर **जलवायु परिवर्तन** का भी सामना कर रही है।

प्लेइस्टोसनि युग:

- यह भू-वैज्ञानिक युग है जिसकी कालावधि लगभग **2,580,000 से 11,700 वर्ष पूर्व तक** है, इसमें पृथ्वी पर **हमिनदीकरण की सबसे हालिया** अवधि शामिल है।
 - प्लेइस्टोसनि युग के दौरान वैश्विक शीतलन या हमियुग की सबसे हालिया घटनाएँ घटित हुईं।
- इस युग में हमियुग के वशाल जीव शामिल थे, जैसे- **वूली मैमथ** (मैमथस प्रमिजिनयिस), **वशाल भालू**, **भयानक भेड़िये और ऊँट**, इनमें से कई प्लेइस्टोसनि युग के अंत में वल्लिपत्त हो गए।
 - इसके परिणामस्वरूप काफी नुकसान हुआ, उत्तरी अमेरिका में 97 पाउंड से अधिक वजन वाले **70% से अधिक**, दक्षिण अमेरिका में **80% से अधिक और ऑस्ट्रेलिया में लगभग 90%** स्तनधारी वल्लिपत्त हो गए।
- प्लेइस्टोसनि युग का अंत **होलोसीन युग की शुरुआत का भी प्रतीक है, यह वर्तमान युग है जिसमें हम रह रहे हैं।**

अध्ययन की प्रमुख वशिषताएँ:

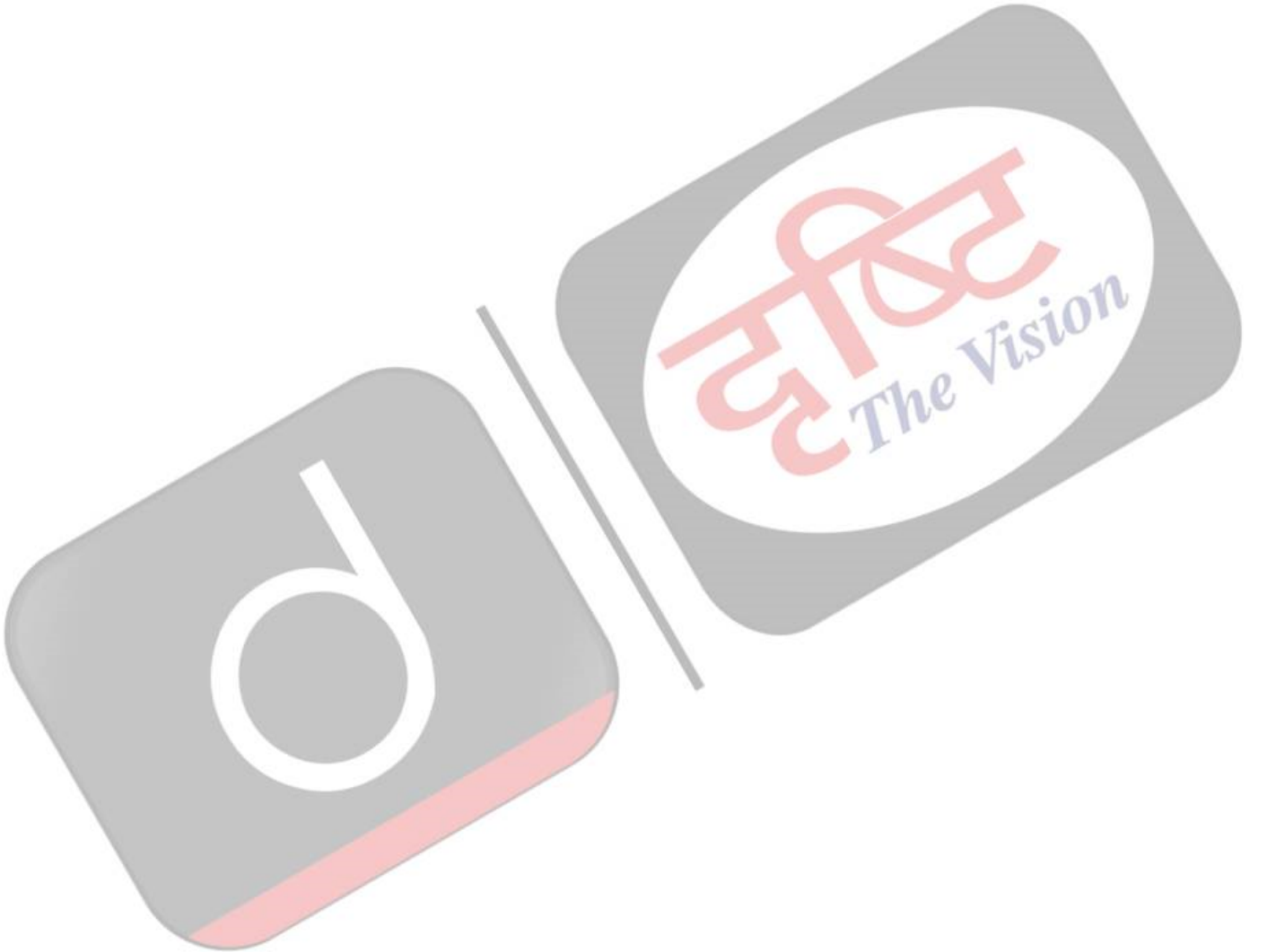
- **ला बरे टार पट्टिस से प्राप्त जानकारी:** ला बरे टार पट्टिस लॉस एंजलिंस, अमेरिका में एक वपुल हमियुग जीवाश्म स्थल है जहाँ डामर के रसिाव में फँसे हज़ारों बड़े स्तनधारियों के संरक्षित अवशेष हैं।
 - जीवाश्मों से प्राप्त प्रोटीन के अध्ययन से **लंबे समय तक सूखे और तीव्र मानव जनसंख्या वृद्धि** के कारण गर्म जलवायु के एक घातक संयोजन का पता चलता है।
 - इन कारकों ने दक्षिणी कैलिफोर्निया के पारस्थितिकी तंत्र को चरम बट्टि पर धकेल दिया, जिससे वनस्पति और मेगा-स्तनपायी आबादी में काफी परिवर्तन हुए।
 - पछिले हमियुग के बाद जैसे-जैसे कैलिफोर्निया गर्म होता गया, परदिश्य शुष्क होता गया और जंगल कम होते गए।
 - ला बरे में **संभवतः मानव शिकार और नविस सथान के नुकसान के संयोजन से शाकाहारी आबादी में भी गरिावट आई।** पेड़ों से जुड़ी प्रजातियाँ, जैसे ऊँट, पूरी तरह से लुप्त हो गईं।
- **एक नया प्रतमान- आग की भूमिका:** यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि **आग दक्षिणी कैलिफोर्निया में अपेक्षाकृत हाल की घटना है, आग लगने की घटना अक्सर मानव आगमन के बाद ही होती है।**
 - **तटीय कैलिफोर्निया में 90% से अधिक आग की घटनाओं का कारण मानवीय गतिविधियाँ जैसे- बजिली लाइन का गरिना और कैम्प फायर है।**
 - प्लेइस्टोसनि में वल्लिपत्तियों और समकालीन संकटों के बीच समानता जैसे मशरिति तनाव पारस्थितिकी तंत्र की भेद्यता को

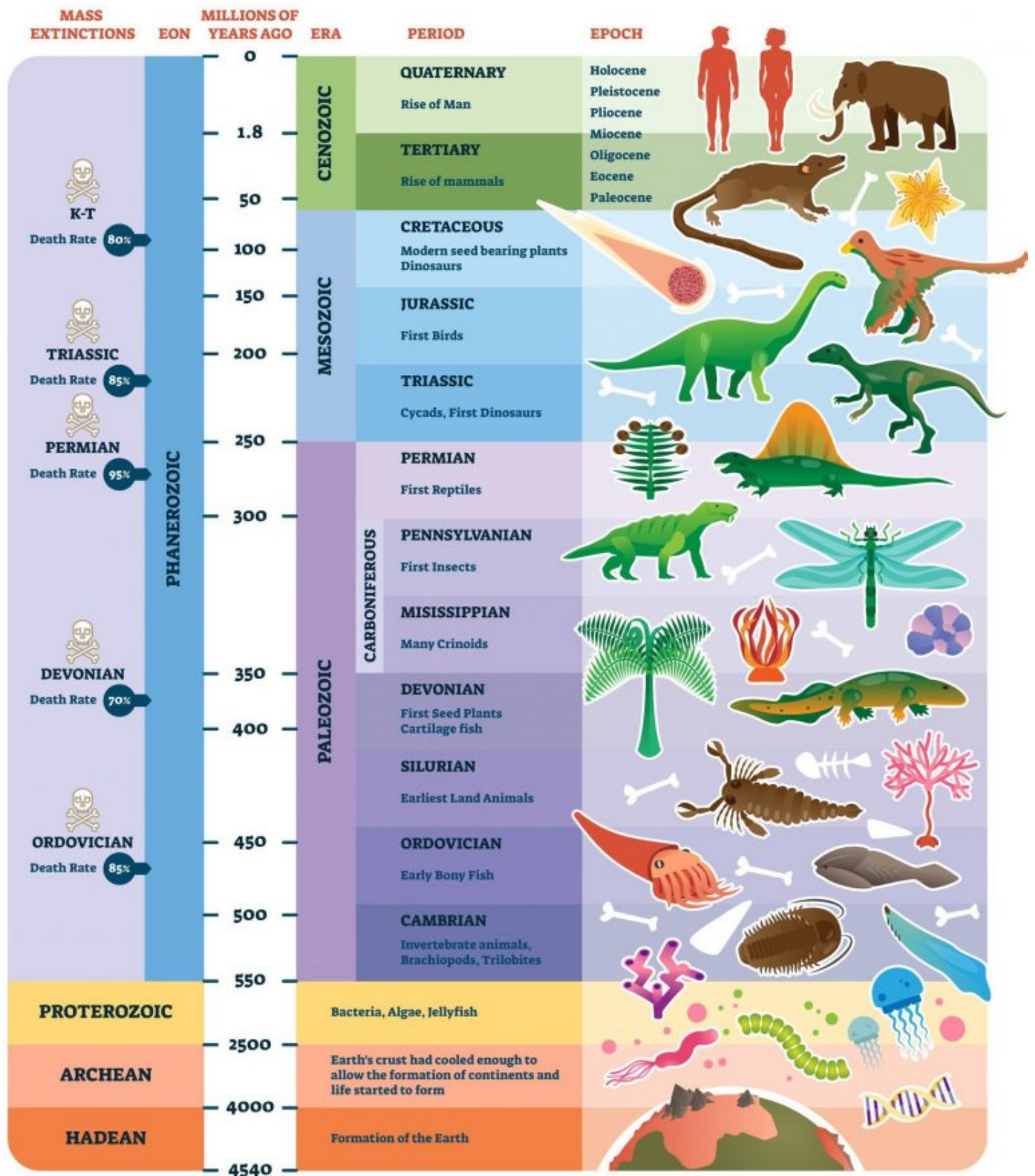
रेखांकित करते हैं।

- जलवायु और जैवविविधता संकट की प्रासंगिकता: वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, मानव जनसंख्या का वसितार, जैवविविधता हानि तथा मानव-जनति आग की घटनाएँ अतीत को प्रतबिंबित करती हैं।
 - वर्तमान में तापमान वृद्धि की दर, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने से प्रेरित, **हमियुग के अंत से कहीं अधिक** है।
 - अध्ययन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, आग की घटनाओं को रोकने और मेगाफौना की सुरक्षा के प्रयासों को तेज़ करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है।

भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम:

- **भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम** एक विशाल समयरेखा की तरह है जो हमें अपने ग्रह के इतिहास को समझने में मदद करता है।
 - जसि प्रकार एक कैलेंडर वर्षों, महीनों और दिनों को विभाजित करता है, उसी प्रकार भू-वैज्ञानिक काल मापक्रम पृथ्वी के इतिहास को **ईयान (Eon)**, **महाकल्प (Era)**, **कल्प (Period)**, **युग (Epoch)** और **आयु (Age)** समय कर्मों में विभाजित करता है।
- ईयान को महाकल्पों में, महाकल्पों को कल्पों में, कल्पों को युगों में और युगों को आयु में विभाजित किया गया है।





भवष्य में व्यापक वलुप्तकरण को रोकने के लिये हमारी प्राथमिकताएँ:

- **समग्र पारस्थितिकी तंत्र की बहाली और संरक्षण:**
 - अभनिव पारस्थितिकी तंत्र मानचित्रण: पारस्थितिकी तंत्र की अवस्था का आकलन करने और बहाली के लिये महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करने हेतु उन्नत मानचित्रण प्रौद्योगिकियों का विकास करना।
 - जैव-गलयारा निर्माण: खंडित आवासों को जोड़ने के लिये पारस्थितिकी गलयारे स्थापति करना, ताकि प्रजातियों को वविधि वातावरणों में स्थानांतरति और वकिसति होने में सकषम बनाया जा सके।
 - नवारक संरक्षण: दीर्घकालिक पारस्थितिकी तंत्र लचीलेपन के लिये महत्त्वपूर्ण पारस्थितिकी संतुलन बनाए रखने हेतु प्रमुख प्रजातियों के संरक्षण को प्राथमिकता देना।
- **प्रजातियों के लचीलेपन के लिए संश्लेषति जीववजिज्ञान का उपयोग:**
 - आनुवंशिक वृद्धि: सुभेद्य प्रजातियों के भीतर आनुवंशिक वविधिता को बढ़ाने, बदलती परस्थितियों के प्रति उनकी अनुकूलन क्षमता में वृद्धि हेतु संश्लेषति जीववजिज्ञान तकनीकों का प्रयोग करना।
 - विकास हेतु समर्थन: प्रजातियों के अनुकूलन के लिये नयित्तरति हस्तक्षेपों के माध्यम से पर्यावरणीय बदलावों के प्रति प्रतिक्रिया को तेज़ करना।
 - नैतिक वमिश्र: संरक्षण प्रयासों में संश्लेषति जीववजिज्ञान के उत्तरदायित्वपूर्ण उपयोग के लिये एक वैश्विक नीति ढाँचा तैयार करना।
- **संसाधनों के सतत् उपयोग के लिये हरति नवाचार:**
 - चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा: संसाधनों की कमी और बरबादी को कम करने के लिये चक्रीय अर्थव्यवस्थाओं (Circular Economies) को बढ़ावा देना, ताकि पारस्थितिकी तंत्र पर दबाव को कम किया जा सके।
 - बायोमिमिक्री और सस्टेनेबल डज़िज़न: उद्योगों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने के लिये पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद वकिसति करना।
 - हरति अवसंरचना: टकिारु बुनयिदी ढाँचे में नविश करना, जो वन्यजीवों के आवास (Habitat Destruction) को कम क्षति पहुँचाता हो, जैसे वन्यजीव-अनुकूल सड़क मार्ग के निर्माण के माध्यम से धारणीय विकास को बढ़ावा देना।
- **डेटा-संचालति संरक्षण प्रबंधन:**
 - पूर्वानुमानति वश्लेषण: पारस्थितिकी तंत्र की गतशीलता को बनाए रखने के लिये मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करना, ताकि वियवधानों को रोकने के लिये समय पर हस्तक्षेप किया जा सके।
 - वास्तविक समय नगिरानी: पारस्थितिकी तंत्र की वास्तविक समय नगिरानी और दबावकारी कारकों का शीघ्र पता लगाने के लिये रिमोट सेंसर तथा उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।
 - सीमाओं के पार सहयोगात्मक संरक्षण प्रयासों को सुवधाजनक बनाने के लिये इंटरकनेक्टेड डेटा-शेयरिंग नेटवर्क स्थापति किये जाने की आवश्यकता है।
- **युवाओं और समुदायों का सकृतीकरण:**
 - पर्यावरण शकिसा में सुधार: जैववविधिता के महत्त्व की गहरी समझ को बढ़ावा देने तथा कम आयु से ही नेतृत्व की भावना जागृत करने के लिये शैकषिक पाठ्यक्रम में सुधार करना।
 - युवा-प्रेरति पहल: नीतियों के निर्माण में उनके प्रभाव तथा भागीदारी को बढ़ाने के लिये युवाओं के नेतृत्व वाली संरक्षण परियोजनाओं और प्लेटफॉर्मों को प्रोत्साहति करना।
 - सांस्कृतिक एकीकरण: सामुदायिक स्वामित्व और टकिारु प्रथाओं को बढ़ावा देते हुए स्वदेशी एवं स्थानीय ज्ञान प्रणालियों की संरक्षण रणनीतियों में एकीकृत करना।

स्रोत: [डाउन टू अर्थ](#)